कानपुर में 402 टैनरियां, चमड़े की जरूरत पर दुनिया भर की कंपनियां करती हैं कानपुर का रुख

ब्रैंड कोई भी हो, लेदर कानपुर का

Praveen.Mohta@timesofindia.com

कानपुर: कन्नौज का जो नाता इत्र से है, वही कानपुर का चमड़े से। चमड़े के कारोबार के दम पर ही कानपुर और आसपास के इलाकों के लाखों घरों में चूल्हा जलता है। कानपुर में 402 टैनरियां हैं। यहां की लेदर इंडस्ट्री मध्य उत्तर प्रदेश के ग्रोथ इंजन जैसी है, लेकिन इसका वजूद सिर्फ बेल्ट, पर्स, फुटवियर और सैडलरी तक नहीं है। कानपुर का चमड़ा किंगमेकर सरीखा है। इसने कई कंपनियों को अर्श पर पहुंचाकर ब्रैंड बना दिया तो तमाम लोगों को नामचीन। यही नहीं, चमड़े की जरूरत पर दुनिया भर की कंपनियां कानपुर का ही रुख करती हैं।

AI IMAGE

चर्मशोधन का इतिहास

सदियों से हो रहा काम

चर्म-शोधन का जिक्र ऋग्वेद में भी है। बैल, हिरण और चीते की खालों का कथाओं में भी जिक्र आता है। महाभारत काल में भी चर्म के इस्तेमाल की जानकारी मिलती है। इतिहासकार मनोज कपूर बताते हैं कि कानपुर क्षेत्र में सदियों से प्राकृतिक तरीके से खालों की टैनिंग कर चमड़ा बनाया जाता था।

फौज के लिए सामान लेते थे अंग्रेज

साल 1909 में प्रकाशित कानपुर के गजेटियर में एचआर नेविल ने लिखा है कि कानपुर को सबसे पहले चमड़े की टैनिंग और चर्म उत्पादों से ख्याति मिली। साल 1778 में कानपुर में छावनी बनाने के बाद अंग्रेज यहां के कारीगरों से ही फौज की जरूरत के लिए चमड़े के सामान लेते थे। तब कानपुर में चमड़ा प्राकृतिक तरीके से तैयार होता था, जबकि यूरोप में केमिकल से टैनिंग होने लगी थी।

1863 में लगी पहली टैनिंग फैक्ट्री

अंग्रेजी सेना की बढ़ती जरूरतें पूरी करने के लिए कैप्टन जॉन स्टीवर्ट ने साल 1863 में कानपुर में पहली सरकारी चमड़ा टैनिंग फैक्ट्री लगवाई। यहां कारीगरों को यूरोपीय तकनीक की टेनिंग दी गई। फिर साल 1880 में डब्ल्यूई कूपर और विलियम ऐलन ने कूपर ऐलन ऐंड कंपनी शुरू की। इसी कंपनी के जरिए अंग्रेजी सेना को बूट और दूसरे सामानों की सप्लाई होती थी। इसके बाद कानपुर में चमड़े की टैनिंग की रफ्तार बढ़ती ही गई।

छोटी शुरुआत से बड़े मुकाम तक

1979 मिर्जा टैनर्स ने खड़ा किया रेड टेप

कानपुर में सातवें दशक के अंत में चमड़ा उद्योग ने नई करवट ली। साल 1979 में इरशाद मिर्जा ने अपने भाई राशिद अहमद संग छोटी टैनरी लगाई। इरशाद के पिता एक टैनरी में टेक्निशन थे। साल 1990 में दोनों भाइयों ने पहली जूता फैक्ट्री लगाई। चार साल बाद ही मिर्जा टैनर्स ने स्टॉक मार्केट में लिस्ट होकर धमाका कर दिया। मिर्जा परिवार की फैक्ट्रियों से रेड टेप जैसा बड़ा फुटवियर ब्रैंड निकला। मिर्जा टैनर्स की मौजूदगी दुनिया के 37 देशों में है। कानपुर और उन्नाव में कई फैक्ट्रियां हैं। मिर्जा इंटरनैशनल का कैपिटलाइजेशन करीब पांच अरब रुपये तो रेडटेप का 1.04 अरब रुपये है। चमड़े के व्यापार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए इरशाद मिर्जा को पद्मश्री से भी नवाजा गया था। साल 2022 में उनका इंतकाल हुआ।

1980 सुपर है सुपरहाउस

अमीन संस लेदर फिनिशर्स ने साल 1980 में खुद को प्राइवेट लिमिटेड के तौर पर स्थापित कर सुपरहाउस ग्रुप शुरू किया। साल 1984 में कंपनी पब्लिक लिमिटेड बनी। इसके बाद सुपरहाउस ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। सुपरहाउस के पास ऐलन कूपर जैसा नामी फ्लैगशिप फुटवियर ब्रैंड है। कानपुर, उन्नाव और देश के कई हिस्सों में इसकी 22 फैक्ट्रियां हैं। सुपरहाउस लिमिटेड का कैपिटलाइजेशन करीब 2.21 अरब रुपये है। सुपरहाउस ग्रुप शिक्षा के क्षेत्र में भी काम कर रहा है। यह कई सब्सिडियरी कंपनियों के साथ दुनिया के 50 देशों में मौजूद है।

1990 बिना पूंजी खड़ा कर दिया ब्रैंड

कांउसिल फॉर लेदर एक्सपोर्ट के सेंट्रल रीजन के चेयरमैन असद कमाल ईराकी ने साल 1990 में छोटे से कमरे में बैग, बेल्ट और सैडलरी का काम शुरू किया। पहले साल का टर्नओवर था-34 हजार रुपये। इससे चमड़े का कारोबार आगे बढ़ाने का हौसला मिला। असद बताते हैं कि एक साल बाद ऑर्डर मिलने से कारोबार बढ़ने लगा। साल 2018 में असद ने कंपनी को पब्लिक लिमिटेड बना दिया। उनकी मेहनत से मेपलवुड ब्रैंड शुरू हुआ। पिछले साल इसका टर्नओवर करीब 70 करोड़ था।

2006 छोटे-छोटे काम से बनी एक्सपोर्टर

पिता की मौत के बाद जीवन पटरी पर लाने के लिए प्रेरणा वर्मा ने पहले जॉब की। फिर एक चमड़ा कारोबारी के साथ काम किया। बात नहीं बनी तो साल 2006 में 10X10 फुट के कमरे से बैग, लेदर एक्सेसरीज और दूसरे प्रॉडक्ट्स का काम शुरू किया। पहले साल का टर्नओवर सिर्फ हजारों में था। उनका मकसद खर्चे पूरे करना ही था, लेकिन उन्होंने काम जारी रखा। आज फैशन कैटिगरी में उनके प्रॉडक्ट यूरोप, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया तक जाते हैं।

प्रीमियम ब्रैंड को भी भाता है कानपुर

काउंसिल फॉर लेदर एक्सपोर्ट के सेंट्रल रीजन में कानपुर का अहम रोल है। साल 2019-20 में सेंट्रल रीजन से 4921 करोड़ रुपये का निर्यात हुआ था, जो 2021-22 में बढ़कर 6768 करोड़ रुपये पहुंच गया। चमकते करोबार ने कानपुर में पैदा हुए कई ब्रैंड्स को देश-विदेश में पहचान दिलाई तो दुनिया के कई ब्रैंड भी कानपुर के सहारे हैं। चमड़ा कारोबारी दानिश साबिर बताते है कि वुडलैंड, ली-कूपर, बेनेटन, वुड्स, मेट्रो, लिवाइस, पेपे, बीइंग ह्यूमन, मैंगो, मेट्रो, लुई विटॉन, स्केचर्स, मार्क्स ऐंड स्पेंसर, एल्डो, क्लार्क्स, हश पपीज, जारा, मोची, जैक एंड जोंस, स्पाइकर और डेकाथलन जैसे ब्रैंड अपने कई लेदर प्रॉडक्ट कानपुर में बनवाते है। कारोबारी मंसूर यासिर बताते है कि फिल्म एक्टर ऋतिक रोशन के ब्रैंड एचआरएक्स के लिए भी कानपुर से लेदर प्रॉडक्ट खरीदे जाते हैं। हैकल और रेंडा जैसे यूरोप के कई प्रीमियम ब्रैंड भी कानपुर के चमड़ा उत्पादों से अपने ग्राहकों को लुभाते हैं।

लेदर की ताकत के मजमून

भर जाएगी फ्लाइट

रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम के तहत साल 2017 में स्पाइसजेट ने कानपुर से फ्लाइट ऑपरेशन शुरू किया। उद्घाटन के वक्त कंपनी के एमडी अजय सिंह कानपुर आए तो उन्होंने मंच से कहा था कि कानपुर में लेदरवालों में ही इतनी ताकत है कि हर बड़े शहर के लिए एक फ्लाइट भर देंगे।

सीएलई में दबदबा

काउंसिल फॉर लेदर एक्सपोर्ट (सीएलई) में कभी दक्षिण भारतीय लॉबी का दबदबा था। सरकारी नीतियां चेन्नै के पक्ष में बनती थीं। ऐसे में वहां निवेश भी ज्यादा होता था। अब इस काउंसिल के अहम पदों पर उत्तर भारतीय भी बैठते हैं। ऐसे में चमड़े पर कोई भी नीति कानपुर के बिना नहीं बनती।

दूसरे सेक्टर में भी पहचान

कानपुर के चमड़ा कारोबारी दूसरे सेक्टरों में भी पकड़ बना चुके हैं। कानपुर से दिल्ली तक सुपरहाउस ग्रुप के कई स्कूल चल रहे हैं। एक एक्सपोर्टर के लग्जरी होटल का निर्माण जारी है। कानपुर में लोग भी कहते हैं कि दुनिया के हर बड़े ब्रैंड की महंगी से महंगी गाड़ी चमड़ेवालों के पास जरूर दिखती है।

क्यों खास है कानपुर का चमड़ा?

कानपुर में परंपरागत रूप से भैंस के चमड़े का इस्तेमाल होता है। ज्यादा मोटाई के कारण यह टिकाऊ होता है। बफलो लेदर दक्षिण एशिया के अलावा कहीं और नहीं मिलता। इसमें भी कानपुर की मौसमी परिस्थितियां दोहरा फायदा देती हैं। पानी में मौजूद एसिड से इसकी टैनिंग बढ़िया होती है। यहां मजदूरी भी कम है। ऐसे में बड़े पैमाने पर उत्पादन और कम लागत के कारण बड़े ब्रैंड कानपुर का रुख करते हैं। वहीं, विदेशी खरीदार चमड़े पर हाथ से होने वाली कारीगरी खूब पसंद करते हैं। जाजमऊ के कई घरों में महिलाएं चमड़े पर कढ़ाई करती आसानी से मिल जाएंगी।

कड़े नियमों का पालन

कानपुर के चमड़ा उद्योग में पिछले कई दशक में काफी बदलाव भी आया है। कानपुर की पूरी मेहनत करने के बाद भी पहले चेन्नै आगे रहता था। वहां विदेशी निवेश भी खूब आता था, लेकिन टैनर्स की नई पीढ़ी और नए उद्यमियों ने खेल के नियम बदल दिए। कोई भी मल्टीनैशनल कंपनी ऑर्डर देने के पहले सोशल ऑडिट करवाती है। इसमें सरकारी नियमों के पालन से लेकर बाल श्रम और प्रदूषण न फैलने के अलावा काम करने की परिस्थितियों की भी जांच होती है। कानपुर की लेदर फैक्ट्रियों में इन मानकों का पूरी तरह पालन हो रहा है।

सैडलरी और सेफ्टी शूज का बड़ा सेंटर

भारत के उलट यूरोप में लोग अब भी घरों में घोड़े पालते रखते हैं। इन घोड़ों की सैडलरी बनाने के लिए जरूरी मोटा चमड़ा कानपुर में ही मिलता है। कोविड काल में यूरोपियन लोगों ने घोड़ों की खूब सवारी की तो सैडलरी के निर्यात में भी इजाफा हुआ। इसी तरह सेफ्टी शूज के सेगमेंट में कानपुर की तूती बोलती है। रूस, यूक्रेन और इजरायल समेत कई देशों बड़े पैमाने पर सेफ्टी शूज की सप्लाई की गई। चीन से मुकाबले और घरेलू मांग पूरी करने के लिए बीते कुछ साल में कानपुर और उन्नाव में कई फुटवियर यूनिटें खुली हैं। उन्नाव से कानपुर के रास्ते में हाइवे किनारे इनकी झलक दिखती है। इसके अलावा सोफे के कवर और कार सीट के कवर भी बड़े पैमाने पर कानपुर में ही बनते हैं।

AI IMAGE

आगे क्या?

विदेशी निवेश बढ़ने के रास्ते खुले

सीएलई सेंट्रल रीजन के चेयरमैन असद ईराकी कहते हैं कि फुटवियर की श्रेणी में कानपुर में निवेश के लिए पोलैंड की कंपनी ने मंसूर यासिर की कंपनी के साथ जॉइंट वेंचर शुरू किया है। यह कंपनी यूरोप की उन्नत तकनीक से भारत में चमड़ा उत्पादन करेगी और यूरोप में निर्यात करेगी। इस तकनीक में टैनिंग में इस्तेमाल होने वाले केमिकल इटली से आते हैं।

बकौल ईराकी, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के कई प्रस्ताव कई दूसरी कंपनियों के साथ पाइपलाइन में हैं।

वीगन लेदर पर भी काम शुरू

एआई के दौर में दुनिया इनोवेशन चाहती है। दुनिया में प्राकृतिक चीजों से बने वीगन लेदर की मांग होने लगी तो कानपुर पीछे नहीं रहा। उन्नाव की एक यूनिट में अब वीगन लेदर बन भी रहा है।